r - 3 Issue - 11 January 2019 ISSN 2456-0898

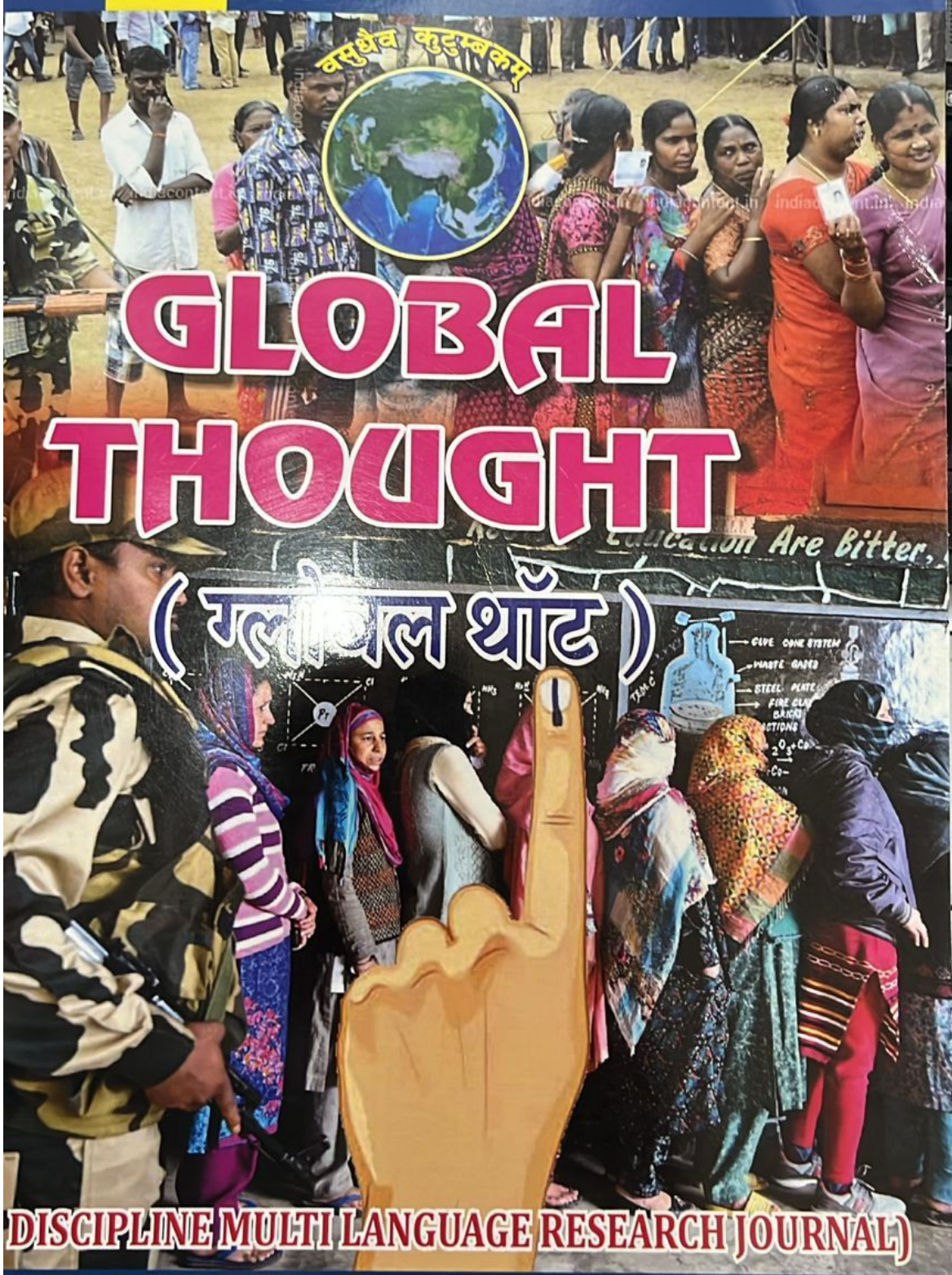

GLOBAL THOUGHT

(ग्लोबल थॉट)

DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

(An International Peer Reviewed Refereed
Quarterly Research Journal)

○ Year : 3 ○ Issue : 11 ○ January 2019 ○ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT
ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

(An International Refereed Quarterly Research Journal)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

Special Note :

Anti national thoughts are not acceptable.

Patron :

Prof. M.M. Agrawal

(Former Dean, Arts Faculty & H.O.D. Sanskrit, University of Delhi, Delhi)

Prof. D.S. Chauhan

(Former H.O.D. Sanskrit, Magadh University, Bodhgaya, Bihar)

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4 ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।

सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान

Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907

आचार्य हेमचन्द्र और उनकी कलिकालसर्वज्ञता 149
डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय
भारतीय मीडिया का महिला अधिकारों की जागरूकता में योगदान 165
डॉ. सुनीता पारीक / डॉ. संजय कुमार
'काली आंधी' : चरित्र-सृष्टि (कमलेश्वर)..... 170
डॉ. भवानी दास
केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में विचारधारा की परिधि को तोड़ता लोकमन..... 177
डॉ. रिम्पी खिल्लन सिंह
गहन है ये अंध-कारा..... 181
निशा नाग
आदिवासी हाईपरटेक्स्ट : ढाँचागत पड़ताल..... 187
डॉ. विजेन्द्र सिंह चौहान
विज्ञापनों की दुनिया : बदलते मूल्य 190
डॉ. रेणु गुप्ता
'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' में अभिव्यक्ति दलित-जीवन 196
डॉ. सुनीता सक्सेना
निर्मल वर्मा की कला और साहित्य संबंधी मान्यताएँ..... 199
इंद्रमणि कुमार
"A Study of the Foreign Direct Investment Conceptual Reporting Framework" --------204
Ram Pravesh Roy
मीराबाई की भक्ति बनाम साधना 211
डॉ. मंजू रानी
वर्तमान समय और कबीर की प्रासंगिकता 216
डॉ. जरीना सईद
ऋग्वेद में वर्णित आयुर्वेदीय ओषधियाँ..... 220
डॉ. सुषमा राणा
पाणिनीय सूत्रों में सप्तमी विभक्ति के अर्थ के विविध आयाम..... 225
विनीत कुमारी
भारत में न्याय व्यवस्था : एक अध्ययन..... 230
डॉ. राजेश उपाध्याय
Chandraketugarh : An Urban Center of early Bengal; Reconstruction of the Urban Experience through Terracotta Figurines 236

SAMĀDHI----------
Rudra Pratap Yadav
कबीर की कविता का सामा
अभिनव

शोध-पत्र

आदिवासी हाईपरटेक्स्ट : ढाँचागत पड़ताल

डॉ. विजेन्द्र सिंह चौहान

धसार : सांस्कृतिक एवं संचार अध्ययनों में संचार
के ढाँचों की प्रकृति में सत्ताई पूर्वग्रहों की व्याप्ति
ांकित करने की प्रवृत्ति कभी-कभी दिखती है
ीडिया संस्थानों आदि में सीमांतीय वर्गों के प्रतिनिधित्व
र उठने वाले सवालों पर केन्द्रित अध्ययन। किंतु
त: सोशल मीडिया की संरचना को इस दृष्टि से
का चलन अभी दृष्टिगत नहीं होता है जबकि
में अश्वेत सीमांतीयता के कुछ अध्ययनों में ऐसा
देता है। प्रस्तुत आलेख इसी रिक्ति को संबोधित
ा प्रयास करता है। इस शोध आलेख की प्रमुख
ना है कि वर्तमान हिन्दी हाईपरटेक्स्ट विशेषतया
ीडिया हाईपरटेक्स्ट का उत्पादन जिस विद्यमान
संरचना से हो रहा है उसमें आदिवासी समाज के
पूर्वग्रहों निबद्ध हैं। उल्लेखनीय है कि यद्यपि कुछ
ा प्रयोग आलेख में किया गया है तथापि आलेख
ापनाओं का प्रमुख आधार सोशल मीडिया को
भेदभाव की लोकेशन के रूप में प्रदर्शित करने
पर इस संरचना के विश्लेषण से उसमें निहित
ूल पूर्वग्रहों को रेखांकित करना है।
ख ऐतिहासिक एवं द्वितीयक स्रोतों के विश्लेषण
रेत है जबकि कुछ हिन्दी हाईपरटेक्स्ट उदाहरणों
ा तार्किक बलाघात के लिए किया गया है।
ली स्टार (1999) ने जब स्थूल आधारिक
के अध्ययन की वैकल्पिक दृष्टि की प्रस्तावना
या की ठोस अथवा अदृश्य आधारिक संरचनाओं
की नजर में आमूलचूल बदलाव आया। अब
जक वर्गों व संरचनाओं के विश्लेषण के लिए
ा का इस्तेमाल किया जाता रहा था उसमें हम

सामान्यत: किसी संरचना में उसके प्रयोक्ताओं के व्यवहार में जो पूर्वग्रह अथवा सांस्कृतिक रूढियाँ प्रतिबिंबित होती हैं उनका ही विश्लेषण करते हैं तथा इसके आधार पर सामाजिक पूर्वग्रहों को रेखांकित करते हैं। सामाजिक सीमांतीयता, साहित्य, भाषा, फिल्मों जैसे सांस्कृतिक उत्पाद अथवा इस कोटि की अन्य संरचनाओं में भी इन पूर्वग्रहों के संधान का महत्त्वपूर्ण शोधकार्य यथासमय होता रहा है। इस क्रम में विभिन्न सीमांतीय अस्मिताओं को लेकर पर्याप्त कार्य इंटरनेट की संरचना में आए पूर्वग्रहों को लेकर भी किया जा सकता है। यह निबन्ध प्रस्तावित करता है कि इंटरनेट पर उपलब्ध विशाल सामग्री में, जिसमें सामग्री की अनुपस्थिति भी शामिल है। इस बात की पर्याप्त संभावना है कि हम आदिवासी समाज को लेकर जो पूर्वग्रह समाज में प्रचलित हैं तथा जिस कोटि की सीमांतीयता हमें समाज में परिलक्षित होती है उसे इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री में खोजने व रेखांकित करने की आवश्यकता है। तथापि प्रस्तुत निबन्ध स्वयं यह कार्य करने का दावा नहीं कर रहा है। इसके प्रस्थान बिन्दु तथा आवश्यक पूर्वपीठिका के रूप में प्रस्तुत निबन्ध मात्र यह प्रस्तावित करता है कि प्रयोक्ताओं के पूर्वग्रह व सीमांतीयता तो इंटरनेट पर उपलब्ध तमाम सोशल मीडिया व अन्य हाईपरटेक्सट में आदिवासी समाज विरोधी पूर्वग्रह दिखाता ही है किंतु उससे भी ज्यादा अहम् है कि हम इस बात को समझने का प्रयास करें कि इस तमाम हाईपरटेक्स्ट की लोकेशन अर्थात स्वयं हाईपरटेक्सट संरचना में ही ऐसे पूर्वग्रह निहित हैं कि वे मुख्यधारा प्रयोक्ताओं के पूर्वग्रहों के अनुरूप हैं अत: दलित व आदिवासी समाज के प्रतिकूल अभिव्यक्तियों के अनुरूप स्थितियों को जन्म देते हैं। यह शोधपत्र सैद्धांतिक अध्ययनों

एच एम वी एल प्रकाशन
कादम्बिनी
सितंबर, 2019 ■ ₹ 30
मोबाइल जेनरेशन
यह जो पीढ़ी है

पिछली कॉमिक्स पीढ़ी के पास ऐसी सहूलियतें नहीं थीं कि वह अपनी कल्पनाओं को हकीकत में बदल सके, पर आज की पीढ़ी के पास तकनीक की ऐसी ताकत है कि वह अपने मनमुताबिक एक ऐसी आभासी दुनिया रच सकती है, जिसे कि वह सच की तरह महसूस करते हुए उसमें जीने का आभास करे। बहरहाल, इस बदलती दुनिया की अपनी दिक्कतें भी हैं, जिन्हें समझने की जरूरत है

क्योंकि शक्तिमान अब गंगाधर नहीं है

हम सब हमेशा से जानते हैं कि गंगाधर ही शक्तिमान है। दरअसल हम उससे भी पहले से यह भी जानते रहे हैं कि कॉमिक्स का सुपर हीरो स्पाइडरमैन और बार-बार दफ्तर में बेइज्जत होता पीटर पार्कर दरअसल एक ही हैं। पीटर पार्कर अपनी दुनिया में एक औसत इनसान है, उसका संपादक उसे तरक्की देने लायक नहीं समझता। जिस लड़की से वह मन-ही-मन प्रेम करता है वह भी उसे ध्यान देने लायक नहीं समझती, लेकिन यही पीटर पार्कर जब अपना सूट पहनकर स्पाइडर मैन हो जाता है, तो उसके पास एक तो असीम ताकतें आ जाती हैं और वह दुनिया का रखवाला सुपरहीरो हो जाता है वहीं अचानक वे सब कमियां उसके जीवन से नदारद हो जाती हैं जो पीटर पार्कर को एक औसतन सफल इनसान तक न होने दे रही थीं।

विजेंद्र सिंह चौहान

कॉमिक्स की दुनिया के साथ बड़ी हुई पीढ़ी हमेशा से अपनी कल्पना में जमीनी और फंतासी दुनिया के इस दोहरेपन से वाकिफ रही है। इस पीढ़ी के लोगों ने सदा अपनी फैंटेसी में यही कल्पना की कि उनके पास भी ऐसी सुपर पावर हों कि दुनिया उनकी ओर देखे, हालांकि वे भी पीटर पार्कर की ही तरह अपनी दुनिया में वापस भी आना चाहते थे। इस कॉमिक्स पीढ़ी को कभी अवसर नहीं मिला कि उसकी यह कल्पना पूरी हो सके लेकिन फिर जैसे हमेशा होता है, दुनिया बदलती है, तकनीक बदलती है और अब नई पीढ़ी में हर गंगाधर हर पीटर पार्कर के पास एक ऐसी काल्पनिक दुनिया रचने और उसमें विचरने की ताकत है जिसमें वे शक्तिमान या सुपर हीरो-जैसा महसूस करते हैं।

> इस सदी के शुरुआती वर्षों तक आते-आते हम इंटरनेट के उस युग में आ गए जिसे प्रौद्योगिकी विचारक टिम ओ रैले ने वेब 2.0 कहा है। यह इंटरनेट का वह चरण है जिसमें इंटरनेट केवल सूचना माध्यम नहीं रह जाता।

इस सदी के शुरुआती वर्षों तक आते-आते हम इंटरनेट के उस युग में आ गए थे जिसे प्रौद्योगिकी विचारक टिम ओ रैले ने वेब 2.0 कहा है। ये इंटरनेट-प्रयोग का वह चरण है जिसमें इंटरनेट केवल सूचना पाने का माध्यम नहीं रह जाता, अपितु इसके इस्तेमालकर्ता खुद ही अपनी सूचनाएं रचने और उन्हें आपस में साझा करने लगते हैं। वे बिना संपादक को जरिया बनाए अपनी बातें ब्लॉग करने लगते हैं, अपनी तस्वीरें, अपने पॉडकास्ट, अपने वीडियो साझा करने लगते हैं। ऐसा वे अपनी सामग्री को केवल असल जिंदगी के दोस्तों-परिजनों या रिश्तेदारों के साथ ही साझा नहीं करते, वरन अब तक अपरिचित लोगों के साथ भी करते हैं। इस तरह आम आदमी की आभासी पहचान की अपनी आजाद दुनिया खड़ी होनी शुरू होती है। यह दुनिया असल गंगाधर को न जानती है, न जानना चाहती है, उससे उन्हें कोई लेना-देना ही नहीं है, इनका परिचय जिस शख्सियत से है वह यह आभासी व्यक्तित्व ही है। अब फेसबुक, यू ट्यूब, ट्विटर, ब्लॉग ही नहीं और आगे आकर इंस्टाग्राम, पबजी, टिकटॉक-जैसे उपकरण

आभ्यंतर

लोक,भाषा,विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

AABHYANTAR

PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL

ISSN:2348-7771

अंक 14 जनवरी-मार्च 2020

संस्थापक

अखिलेश कुमार द्विवेदी

(संस्कृत शिक्षक, ग्राम-हंटरगंज, जिला-चतरा, राज्य-झारखण्ड)

परामर्श

प्रो. अनिल राय

(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. विनोद तिवारी

(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. रामनारायण पटेल

(हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. सुधांशु शुक्ल

(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. राजेश शर्मा

(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. यांचा पाण्डेय

(हिंदी विभाग, रामनारायण उच्च महाविद्यालय, विनोबा भावे विश्वविद्यालय)

डॉ. पारसेन्द्र पंकज

(सहा. प्रो. दिल्ली विश्वविद्यालय)

मूल्यांकन समिति मंडल

प्रो. कैलाश कौशल

(हिंदी विभाग जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, राजस्थान)

प्रो. रमेश चन्द्र त्रिपाठी

(हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)

प्रो. पवन अग्रवाल

(हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)

प्रो. सत्यकेतु

(हिंदी विभाग, डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

प्रो. प्रमोद कोवप्रत

(हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल)

प्रो. प्रीति सागर

(हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

प्रो. अवधेश कुमार

(हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

प्रो. मुन्ना तिवारी

(हिंदी विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी)

प्रो. रमा

(हिंदी विभाग, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. माला मिश्रा

(हिंदी विभाग, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. सुशील राय

(सेंट एंड्रूज स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)

डॉ. नरेंद्र मिश्र

(हिंदी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान)

डॉ. बलजीत प्रसाद श्रीवास्तव

(डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

डॉ. एन. लक्ष्मी

(सहायक प्रोफेसर, अंडमान कॉलेज, पोर्ट ब्लेयर)

डॉ. विनय कुमार

(हिंदी विभाग, सत्यवती कॉलेज(सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय)

संपादक

कुमार विश्वमंगल पाण्डेय

उप-संपादक

दीपाली कुजूर

सह-संपादक

सज्जन कुमार पासवान

पंकज कुमार

संपादन संपर्क

डी-1448,जहाँगीर पुरी नई दिल्ली-110033

E-MAIL- aabhyantar123@gmail.com

BLOG- aabhyantar.blogspot.com

Phone no- 9130679861

Whatsapp no- 9404620059

मूल्य रु. 100, वार्षिक मूल्य रु. 400, संस्था और पुस्तकालय रु. 600, आजीवन रु. 5000, सभी भुगतान मनीआर्डर, चेक, बैंक-ड्राफ्ट आभ्यंतर के नाम से किए जाएँ| दिल्ली के बहार के चेक में बैंक कमीशन अवश्य जोड़ें| सभी पद अवैतनिक और अव्यावसायिक हैं| आभ्यंतर में प्रकाशित लेखकों के विचार से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं| सभी कानूनी मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे|

Scanned with CamScanner

इस अंक में...

शोध-आलेख...

4.संपादकीय...कुमार विश्वमंगल पाण्डेय

5.भोजपुरी लोकगीतों में 'कजरी' की प्रासंगिकता...डॉ. आरती पाठक

8.गाँधी-शिक्षा, सिद्धांत व मूल्य- वर्तमान संदर्भ में...डॉ. संध्या जैन

11.जीवन मूल्य : स्वरूप एवं महत्व...डॉ. श्रीनिवास सिंह यादव

14.वैश्वीकरण का स्वरूप और प्रभाव...विकास शर्मा

20.प्रेमचंद की कहानियाँ : दलित आलोचकों की दृष्टि में...प्रेम कुमार

23.भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी कहानी...डॉ. ममता सिंह

25.बाढ़-त्रासदी और हिंदी कहानी...मो. साबिर

28.मजदूर वर्ग के अपराजेय की कहानी 'टेपचू'...डॉ. मृत्युंजय कोईरी

31.सूरदास और मीरा के काव्य में लोक और शास्त्र का द्वंद...रेखा कुमारी

35.बिहारी के काव्य में चित्रांकन का स्वरूप...दीपाली

40.गांधी की बुनियादी शिक्षा : अवधारणा एवं नारी स्वावलंबन...डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय

43.हिंदी सिने-संगीत तथा लोक संगीत...नितप्रिया प्रलय

46.गोविंद मिश्र के यात्रा-साहित्य में अंतर्निहित लोक-संस्कृति...डॉ. सोमाभाई पटेल

50.यात्रा साहित्य की अवधारणा और प्रासंगिकता...प्रो. बालेश्वर राम

53.निराला के काव्य में राष्ट्रीय-चेतना...दीपक कुमार भारती

57.कवि नागार्जुन का सांस्कृतिक निहितार्थ : लोकऔर जनता का अंतर्द्वंद्व...अमित कुमार

61.भाषा-विवाद में शिवपूजन सहाय का हस्तक्षेप...अम्बिका कुमारी

65.मछुआरे: मछुआरे जीवन की त्रासदी और प्रेम की दारुण कथा...सारिका ठाकुर

67.हिंदी कविता में दलित चेतना...डॉ. प्रभात कुमार 'प्रभाकर'

70.भाषा संरक्षण का महत्व एवं अनिवार्यता: एक समाज भाषा वैज्ञानिक दृष्टि (निहाली भाषा के विशेष संदर्भ में)...अनामिका गुप्ता

74.हिंदी मानववाची नामपद : रूप-रचना व विश्लेषण...अभिजीत प्रसाद

80.21वीं शताब्दी के नाट्य साहित्य में नारी के बदलते स्वरूप का अध्ययन (हिंदी और पंजाबी के नाटकों की तुलनात्मक दृष्टि से) ...गुरमीत सिंह

84.नवीन तकनीकी आयामों में रचती बसती हिंदी...रिपुदमन तिवारी

89.किस्सा गुलाम : गुलामी का आयाम...जितेन्द्र कुमार यादव

92.वैश्विक चिंतन के साथ गतिमान है मैथिली साहित्य (मैथिली मूल से अनुदित आलेख)...नारायण झा

98.संजीव की कहानियों में आदिवासी जीवन का यथार्थ-बोध...डॉ. अर्जुन के तड़वी

100.आदिवासी कविताओं में स्त्री...सायरा बानो

106.बिहारी लाल के काव्य में चित्रधर्मिता...जयंती माला

108.अखिलेश की कहानियों का सामाजिक यथार्थ- समकालीन सन्दर्भ में...निधि त्रिपाठी

113.वर्तमान समाज में नारी की बदलती छवि...रेखा भाटी

117.जनवाद की कसौटी पर गोरख पाण्डेय की कविता...अभिमन्यु कुमार राय

120.लोकगाथा : जातीय पीड़ा की सामूहिक अभिव्यक्ति...रामलखन कुमार

125.कहानी का रंगमंच : स्वरूप और शैली...सरिता

130.हंसराज रहबर के कथा साहित्य में तत्कालीन सामाजिक संरचना...डॉ. पंकज कुमार

136.लोकगीत की अवधारणा तथा संबलपुरी लोकगीत में स्पंदित जीवन...डॉ. प्रताप केशरी होता, डॉ. टिकेश्वर होता

142.हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी जनजीवन...नीतू कुमारी

145.'तुम्हारे प्यार की पाती' में अभिव्यक्त युग जीवन...डॉ. शेख अब्दुल वहाब

147.हिंदी नई आलोचना में कुमार विमल का अवदान...डॉ. गोस्वामी जैनेंद्र कुमार भारती

151.कुमार विमल की कविताओं में अभिव्यक्त जीवन-दर्शन...डॉ. कृष्णा नन्द भारती

154.भीष्म साहनी के उपन्यासों में राजनीतिक मूल्यबोध...रीमा गुप्ता

158.भारतेंदु के निबंधों में सामाजिक संस्कृति का प्रभाव...प्रो. अवधेश कुमार

162.संत बौआ साहब की रचनाओं का भाव पक्ष-एक अनुशीलन...पप्पू कुमार

166.समकालीन हिंदी यात्रा-वृतों में सामाजिक आयाम...डॉ. अनिता भट्ट

169.'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएं...सुरेश डुडवे

174.पृथ्वीराज रासो का साहित्येतिहासिक अनुशीलन...अभिनव

177.डॉ. रामविलास शर्मा का आलोचना कर्म : हिंदी आलोचना का 'ज्ञानकांड'...अमन कुमार

184.हिंदी कहानी का आदिवासी स्वर...डॉ. रौबी

- **कविता**.... 1.बादल जीवन फिर लाए तो 2.शिक्षक 3.एक व्यक्ति की व्यथा 4.आधुनिक नारी 5.गज़ल 6.शायर 7.तेरे जाने के बाद 8.मेरे कालिदास 9.वनिता 10.आओचांद पर चले...**निमिषा सिंघल**

Scanned with CamScanner

बाढ़-त्रासदी और हिंदी कहानी

मो. साबिर
हिंदी विभाग, जाकिर हुसैन
दिल्ली कॉलेज, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली

आज का युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान ने हर क्षेत्र में परिवर्तन ला दिया है। हमारे जीवन स्तर को ऊपर उठाने में विज्ञान का बहुत योगदान है। वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग करके प्राकृतिक आपदा की विभीषिका को कम किया जा सकता है। आज भी सरकारी तंत्र प्राकृतिक आपदा को लेकर गंभीर नहीं है। हरिशंकर परसाई लिखते हैं- "मेरे सामने एक चित्र है। एक प्रदेश का मन्त्री प्रधानमंत्री को सुखाग्रस्त इलाका दिखा रहा है। सूखा, बाढ़ और दंगा में सबसे सुंदर प्राकृतिक दृश्य इस देश में हैं, जिन्हें प्रदेश के मन्त्री, प्रधानमंत्री और विदेशी अतिथियों को दिखाते रहते हैं। उस चित्र में मन्त्री हंस रहा है। निरंतर पार्टी के मकान में झाड़ू लगाकर मन्त्री बने रहने की सफलता से शायद वह हंस रहा है। फिर हर साल तो सूखा पड़ता है। कोई कब तक उदास होकर उसे दिखाये।"[1]

आज भी सरकार का ध्यान इस ओर नहीं है। इसका जीता-जागता उदाहरण महानगरों में प्रदूषण की समस्या है। दिल्ली में तो प्रदूषण की समस्या दीपावली से दिसंबर तक इतनी अधिक बढ़ जाती है कि सांस लेना भी कठिन हो जाता है। वैसे भी दिल्ली में पूरे साल प्रदूषण खतरे के निशान को छूता रहता है। जबकि सभी क्षेत्रों में विज्ञान ने विकास कर लिया है। इसका चित्रण 'कागज का जहाज' नामक कहानी में इस प्रकार मिलता है- "डी.एम. साहब बाढ़ पीड़ितों की दशा देखकर एक पल के लिए चिंतित से लगे। उन्होंने बी.डी.ओ. से बंगले पर फोन लगाने के लिए कहा। बी.डी.ओ. ने सेलफोन आगे बढ़ाते हुए कहा- देखते हैं सर.... चारो ओर पानी ही पानी..... बाढ़ ही बाढ़.... लेकिन नेटवर्क पर जरा भी असर नहीं..... लीजिए बात कीजिए सर। डी.एम. साहब मेम साहब को बाढ़ की विभीषिका का हाल सुनाने लगे। रामदीन अचरज से कभी चारो ओर दूर-दूर तक फैले पानी को तो कभी बी.डी.ओ. साहब के सेलफोन को देख रहा था। और सोच रहा था कि आखिर जादू की इस डिबिया ने बाढ़ को कैसे पछाड़ दिया है और इसे बनाने वाले जादूगर कहां रहते हैं। वे बाढ़ पर अपना जादू क्यों नहीं चलाते?"[2]

प्राकृतिक आपदाओं का आना कोई नई बात नहीं है। यह भी कहा जा सकता है कि मनुष्य का इतिहास जितना पुराना है उतना ही प्राकृतिक आपदाओं का भी। लेकिन इन आपदाओं की स्थिति से निपटने के लिए सरकार प्रयासरत नहीं है। देश के कई राज्यों की तरह बिहार और उत्तर प्रदेश में भी बाढ़ हर साल आती है। यहां की जनता बाढ़ से प्रत्येक वर्ष जूझने और फिर से जीवन कर्म में लगने की अभ्यस्त है। देश की कुल बाढ़ प्रभावित जनसंख्या का आधे से अधिक भाग यहां का है। जिस प्रकार बिहार का उत्तरी भाग बाढ़ से त्रस्त होता रहता है उसी प्रकार की स्थिति उत्तर प्रदेश की रहती है। उत्तर प्रदेश का भी बहुत बड़ा भाग प्रति वर्ष बाढ़ की चपेट में आता है, इसका कोई स्थायी समाधान अभी तक नहीं किया जा सका है। बिहार में कोसी नदी समय-समय पर अपना रास्ता बदलती रहती है। रास्ता बदलने के कारण कोसी नदी की बाढ़ का प्रकोप और अधिक बढ़ जाता है। नदियों की धारा बदलने के स्वभाव को समझने की आवश्यकता है। इसके कारणों की जांच होनी चाहिए। बाढ़ की त्रासदी को हिंदी कहानी में भी व्यक्त किया गया है। अरुण प्रकाश की 'जल-प्रान्तर', मो. आरिफ की 'कागज का जहाज', संजय कुंदन की 'हेलीकॉप्टर', अमिताभ शंकर चौधरी की 'सुरसा का मुँह' और संतोष दीक्षित की 'हलकुटिया' बाढ़-त्रासदी को दिखाने वाली कुछ कहानियां हैं। सन् 1988 में अरुण प्रकाश की कहानी 'जल-प्रान्तर' प्रकाशित हुई थी। सन् 2008 की कोसी की विभीषिका को देखते हुए 'अंनभै साँचा' पत्रिका के संपादक ने इस कहानी को पुनः प्रकाशित करने का निर्णय लिया। हमें उनके इस निर्णय का सम्मान करना चाहिए। क्योंकि यह कहानी बाढ़ की विसंगतियों को बहुत अच्छी तरह से चित्रित करती है। भारतीय स्त्री हमेशा पुरुष से अधिक धार्मिक रही है। धर्म की आस्था और विश्वास उसके अंदर कूट-कूट कर भर दिया जाता है। धर्म की आस्था अंधविश्वास का रूप ले लेती है। इसके विपरीत अगर धार्मिक आस्था से ही उसके परिवार पर संकट आता है तो अपने परिवार की रक्षा के लिए वह उसे एक झटके से अलग भी होने की शक्ति रखती है। वह परिवार की रक्षा के लिए सब कुछ त्याग सकती है। यही कारण है कि 'जल-प्रान्तर' कहानी में पंडित वासुदेव पूरा का पूरा गांव खाली होने पर भी मंदिर छोड़कर नहीं जाते हैं। उनका विश्वास है कि भगवान सबकी रक्षा करते हैं। इसके विरोध में पंडिताइन कहती हैं- "भगवान रक्षा करते तो परलय होता?"[3] 'जल-प्रान्तर' में बाढ़ के कारण उमड़ी व्यथा का चित्रण बहुत स्पष्ट तरह से किया गया है। बाढ़ के कारण उपजे दर्द की संवेदना को कहानीकार पाठक के हृदय में उतारने में सफल हुआ है। इसलिए यह कहानी बाढ़ को आधार बनाकर लिखी गयी है। यह कहानी कहानियों में अपनी अलग जगह बनाती है। खगेंद्र ठाकुर के अनुसार- "इस कहानी (जल-प्रान्तर) का दर्द सीधे पाठकों तक पहुंचता है और उन्हें संवेदित करता है।"[4]

यह बात जनता की समझ में आने लगी है कि हमारे देश में बाढ़ से बचने के उपायों पर जब तक कागजी अमल होता है तब तक सूखे का संकट नजर आने लगता है। अब इसमें किसी को भी संदेह नहीं रहा है कि जिन घटनाओं को प्राकृतिक आपदा का नाम देकर सरकार अपने कर्तव्य से बचने का रास्ता खोजती है वे आपदाएँ पूरी तरह से प्रकृति की देन नहीं कही जा सकती है। यदि कोसी नदी पर बने बांध और उसके तटबंधों का रखरखाव सही ढंग से किया जाता

Scanned with CamScanner

तो बिहार में लाखों जन बाढ़ के संकट से बच सकते थे। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में हर साल बाढ़ से तबाही मचती है। नेपाल द्वारा नदियों में छोड़ा गया पानी इस तबाही का कारण होता है। उत्तर प्रदेश में बहने वाली अधिकतर नदियाँ घाघरा, शारदा, राप्ती, गंडक आदि नेपाल की सीमा से ही उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है। बरसात के दिनों में नेपाल से अचानक पानी छोड़ दिए जाने के कारण यह नदियाँ उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में तबाही मचा देती हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार में होने वाली इस क्षति को रोकने के लिए अब तक कोई ऐसी कार्य-योजना तैयार नहीं की जा सकी है, जिससे इस समस्या का स्थायी समाधान निकाला जा सके। भारत और नेपाल के बीच 1996 में 'महाकाली संधि' समझौता हुआ था, जिसमें दोनों देशों को सिंचाई, विद्युत उत्पादन और बाढ़ नियंत्रण के लिए मिलजुल कर काम करना था। अभी तक इन परियोजनाओं पर निर्माण की गति शून्य है। प्रदेश सरकार इसके लिए केंद्र सरकार को जिम्मेदार ठहरा कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेती है। ऐसे में केंद्र सरकार के साथ मिलकर प्रदेश सरकारों को इस दिशा में कोई ठोस निर्णय लेना चाहिए। इस ओर संकेत करते हुए अरुण प्रकाश ने अपनी कहानी में अब से बीस साल पहले सरकार के साथ-साथ जनता को भी जो हर साल बाढ़ से कष्ट उठाती है, कर्तव्य का अहसास कराया है।

आदिकाल में नदियाँ हमें जीवन प्रदान करती थी। इसी कारण वह हमारी धार्मिक आस्थाओं से जुड़ती गयीं। हम आज भी नदियों को धार्मिक आस्था से जोड़कर माँ के रूप में देखते हैं। लेकिन नदियों के उथलेपन को दूर करने के लिए किसी प्रकार की मेहनत नहीं करते। 'जल-प्रान्तर' कहानी के एक पात्र रामबालक राम ने इसी बात को इस प्रकार व्यक्त किया है- "गंगा धार्मिक श्रद्धालुओं के लिए माँ है। हम, तुम उसके बाढ़ की कोरे की मार साल-भर सहलाते रहते हैं। काहे की माँ है यह गंगा, जिसकी कोख में बालू भरता जा रहा है। थोड़ा-सा पानी यह सह नहीं पाती, उलीच देती है। नदी माँ होती है, तब जब वह तुम्हें सींचे। यह सींचे भी कैसे, न बाँध हमने बनाए, न इसकी कोख के बालू को साफ किया। बस गंगा माई-गंगा माई का जाप करने से मरने के बाद ही स्वर्ग मिलेगा। तब तक जिओगे, गंगा तुम्हारा जीवन नर्क बना देगी।"[5] शिवप्रसाद सिंह की 'कर्मनाशा की हार' कहानी भी धार्मिक आस्था के कारण उपजे अंधविश्वास का विरोध करती है। गाँव वालों की दृष्टि में कर्मनाशा में बाढ़ आने का कारण किसी अनहोनी का होना माना जाता है। इस बार बाढ़ आने का कारण विधवा 'फुलमत' का माँ बनना है। वाचक के अनुसार- "कर्मनाशा के बारे में किनारे के लोगों में एक विश्वास प्रचलित था कि यदि एक बार नदी में बाढ़ आए तो बिना मनुष्य की बलि लिए लौटती नहीं।"[6] इस बार बाढ़ के प्रकोप को कम करने के लिए गाँव वाले विधवा फूलमत और उसके बच्चे की बलि देने के लिए नदी के किनारे इकट्ठा होते हैं। भैरो पांडे इसका विरोध किस प्रकार करते हैं- "कर्मनाशा की बाढ़ दूधमुँहे बच्चे और एक अबला की बलि देने से नहीं रुकेगी, उसके लिए तुम्हें पसीना बहाकर बाँधों को ठीक करना होगा।"[7] यह प्रश्न आज भी अन सुलझा रहा है। अब भी नदी लोगों की आस्था और धर्म से ही जुड़ी है।

यह सही है कि बाढ़ग्रस्त इलाकों में स्वयंसेवी संस्थाएं अपनी सामर्थ्य के हिसाब से बाढ़ पीड़ितों की मदद करती हैं। भारतीय समाज में हमेशा से एक वर्ग ऐसा रहा है जिसने बाढ़-भूकंप के समय दिल खोलकर पीड़ितों की सहायता की है। इसका एक रूप 'जल-प्रान्तर' में इस प्रकार मिलता है- "अभाव, लगातार वर्षा और सरकारी बेरुखी के अजगर ने कैम्प को लपेटकर तानना शुरू कर दिया था। जो भी मामूली-सा रिलीफ मिलता उसे अपने-अपने क्षेत्रों में बटवाने के लिए विधायकों, सांसदों में छीना-झपटी मची थी। कुछ स्वयं सेवी संस्थाएं मदद के लिए आ गयी थीं। व्यापार मंडल, बाजार समिति, हिरदयराम गोशाला, रोटरी और लायन्स क्लब वगैरह थोड़ा-बहुत मदद कर रहे थे। रामबालक, रमेसर, संतोष वगैरह राहत सामग्री जुटाकर बाँटने के काम में जुटे थे ताकि लोग हिम्मत न हारें।"[8] हरिशंकर परसाई का एक निबंध है- 'फिर उसी नर्मदा मैया की जय' होशंगाबाद के जल-प्रलय का लेखक ने आँखों देखा वर्णन किया है। यहाँ के लोग बाढ़ पीड़ितों की हर प्रकार से मदद कर रहे हैं। मदद करने के पीछे इनका कोई स्वार्थ भी नहीं है। वे निष्पक्ष भाव से दिल खोलकर सहायता कर रहे हैं। परसाई जी ने लिखा है- "मध्यवर्ग की महिलाओं ने गहने बेच दिये और कहा- 'गहने के बिना आदमी नहीं मरता। अन्य के बिना मरता है। बेच दो इन बहनों को और खाने का सामान लाओ।..... जो दुकान करते हैं, मुनाफा कमाते हैं, उन लोगों में से भी जो पशु नहीं आदमी थे, दुकानें और गोदामें खोल दी।"[9]

बाढ़ की चपेट वाले क्षेत्र में बचाव और राहत कार्य व्यवस्थित प्रकार से नहीं होता है। सरकारी शासन तंत्र और अफसर वर्ग प्राकृतिक आपदाओं से अपने स्वार्थ सिद्ध करने में लगा रहता है। बचाव व राहत कार्य का व्यवस्थित प्रकार से न हो पाना राज्य सरकार और साथ ही केंद्रीय सत्ता के सामने गंभीर सवाल खड़े करता है। अस्सी के दशक में प्रसाद जी ने यह सवाल उठाए थे- "पर इस जमाने में भी बाढ़ से बचाव का इंतजाम न हो, यह बात प्राकृतिक मानकर भी शर्मनाक है। आदमी जगह छोड़ेगा नहीं। पर विज्ञान और टेक्नोलॉजी कहाँ चली गयी? जहाँ हर कभी बाढ़ आती है, वहाँ पहले से इंतजाम क्यों नहीं? आसपास सर्वे क्यों नहीं? खतरे के स्तर पर पहुंचने पर नीची बस्तियाँ खाली क्यों नहीं करायी जाती?"[10] मो. आरिफ की कहानी 'कागज का जहाज' में भी बाढ़' रामदीन' और 'सोनवा' के जीवन की नीति बन गयी है। बाढ़ हर साल आती है। बाढ़ के हर साल आने से इन्हें या इनके जैसे लाखों लोगों को दुख नहीं होता। क्योंकि बाढ़ आने से पहले का जीवन बाढ़ के समय से

Scanned with CamScanner

बहुत अच्छा नहीं होता है। अमिताभ शंकर चौधरी की 'सुरसा का मुँह' भी यही संकेत करती है कि बाढ़ से पहले बाढ़ पीड़ितों का जीवन मूलभूत आवश्यकताओं से रहित रहता है। भूखा रहना या आधा पेट खाकर सोना इन गरीबों की नियति बनती जा रही है। बल्कि हम कह सकते हैं कि जो खाने की वस्तुएँ वे पूरे वर्ष देख भी नहीं पाते वे बाढ़ के समय राहत सामग्री के रूप में खाने को मिल जाती हैं। यही कारण है कि बाढ़ के समय मिलने वाली राहत सामग्री को लेकर इनमें एक प्रकार का काईंनयापन आ गया है। रेल पटरी पर राहत सामग्री के बहुत समय से न आने पर 'रामदीन' सोचता है- "पिछले अड़तालिस घंटों से मूसलाधार बारिश ने रेल पटरी पर डेरा जमाने का मजा ही किरकिरा कर दिया। इससे अच्छा तो सड़क का किनारा हुआ करता था। मति मारी गई थी देउली वालों की। सोनवा तो जिद पड़ी थी कि मोरछा की ओर निकल लो ठीक रहेगा। लेकिन बिना बुलाये मेहमान की तरह अचानक आई बाढ़ ने उतनी दूर जाने का मौका कहाँ दिया। चलो अब अगली बार ऐसा ना होने देंगे।"[11] जाड़ा, गरमी, बरसात की तरह बाढ़ भी इनके लिए एक ऋतु के समान ही है।

'कागज का जहाज' बाढ़ की त्रासदी के अनेक पक्षों को उजागर करती है। जीवन-रक्षा के सभी साधन बाढ़ अपने साथ बहा ले जाती है। केवल बची रहती है पेट की भूख। इसी भूख के कारण बच्चों को बेहाल देखकर सोनवा राजाराम का कहा मान जाती है और अपने शरीर पर उसके हाथ की फिस्लन महसूस करती रहती है। कहानी के अनुसार- "राजा-राम ने इधर-उधर देखा..... कुछ और सट गया। फिर मुँह की खैनी पिच्च से थूकते हुए बोला- कहो तो किलोभर मीट अभी पटक जाँऊ, एक पैसे ले लूँगा, देवी माई की कसम। लेकिन बोल कैसे पकायेगी? सामान चाहिए तो देख..... बड़ा रिस्क का काम है.....दस मील पानी में आना जाना होगा। लेकिन तू चाहेगी तो सब हो जाएगा।..... राजाराम का हाथ सोनवा के कंधे पर पहुँच गया और वह उसकी आँखों में झांकने लगा। फिर धीरे-धीरे हाथ कंधे से नीचे उतरने लगा। सोनवा कसमसाई, सकुचाई लेकिन बोली कुछ नहीं। वह और निकट सट गया..... फिर दूसरे हाथ से उसके होठों को उसके दोनों गालों को सहलाने लगा। सोनवा चुपचाप बैठी रही। लगभग आधे घंटे और ठहरने के बाद राजाराम चलता बना।"[12]

'कागज का जहाज' तक आते-आते लेखक सभी को भ्रष्टाचार के दलदल में धकेल देता है। यहाँ सभी लोग अपने स्वार्थ को सिद्ध करने में लगे नजर आते हैं। जबकि परसाई और अरुण प्रकाश अपने यहाँ एक वर्ग द्वारा पीडितों की सहायता करवाकर मनुष्यता को बचाए रखना चाहते हैं। महत्वपूर्ण बात यह होती है कि रचनाकार विडंबना और कष्टों के साथ आशा का आयाम भी प्रस्तुत करे। जब किसी रचना के पात्र स्वयं समस्याओं से लड़ते हैं तो आशा का स्वर रचना पर आरोपित नहीं लगता है। अच्छा रचनाकार समस्याओं की गहराई और जटिलताओं में जाकर उन्हें समझता है। समस्याओं को समझने का ठीक रास्ता उन समस्याओं से जूझना ही है। इसी से समझ पैदा होती है और यह समाधान का रास्ता भी सुझता है। 'जल-प्रान्तर' के रचनाकार ने भी आशा को बचाए रखा है। उनके यहाँ संतोष और उसके साथी पीड़ितों की सहायता बिना किसी स्वार्थ के करते हैं। इसलिए बाढ़ पर लिखी या कहानी हमारे समय के भ्रष्टाचार को उजागर करने के अतिरिक्त आंतरिक जद्दोजहद से गुजरकर मनुष्यता का सौंदर्य भी उपस्थित करती है।

संदर्भ सूची:-

1.परसाई रचनावली भाग-3
2.कथाक्रम (त्रैमासिक पत्रिका), जुलाई-सितंबर, 2008
3.अनभै साँचा (त्रैमासिक पत्रिका), जुलाई-सितंबर, 2008, अंक-11, पृष्ठ-34
4.वसुधा-79, (त्रैमासिक पत्रिका), सं. कमला प्रसाद, पृष्ठ-67
5.अनभै साँचा (त्रैमासिक पत्रिका), जुलाई-सितंबर, 2008, अंक-11 सं. द्वारिका प्रसाद चारूमित्र, पृष्ठ-32
6.प्रतिनिधि कहानियाँ, शिवप्रसाद सिंह, पृष्ठ-142
7.वही, पृष्ठ-142
8.अनभै साँचा (त्रैमासिक पत्रिका), जुलाई-सितंबर, 2008, सं. द्वारिका प्रसाद चारूमित्र पृष्ठ-32
9.परसाई रचनावली-3, पृष्ठ-267
10.वही, पृष्ठ-267
11.कथाक्रम (त्रैमासिक पत्रिका), जिलाई-सितंबर, 2008, सं. शैलेन्द्र सागर, पृष्ठ-71
12.वही, पृष्ठ-75

Scanned with CamScanner

विश्व हिंदी पत्रिका
2019

प्रधान संपादक
प्रो. विनोद कुमार मिश्र

संपादक
डॉ. माधुरी रामधारी

विश्व हिंदी सचिवालय
इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423,
मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Independance Street, Phoenix 73423,
Mauritius

info@vishwahindi.com
वेबसाइट / Website : www.vishwahindi.com
फ़ोन / Phone : +230-6600800, फ़ैक्स / Fax: 00-230-6064855

Scanned with CamScanner

ISSN No. : 1694-2477

सहायक संपादक
श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैवी-विहारी

संपादन सहयोग
डॉ. वेद रमण पांडेय

टंकण टीम
श्रीमती विजया सरजु, श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु,
श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न

निवेदन

विश्व हिंदी पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचार लेखकों के अपने है।
विश्व हिंदी सचिवालय और संपादक मंडल का उनके विचारों से सहमत होना
आवश्यक नही है।

पृष्ठ सज्जा
आर. एस. प्रिंट्स

स्टार पब्लिकेशंस प्रा. लि., 4/5 बी, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-110002 (भारत) द्वारा प्रकाशित

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

हिंदी : उद्भव एवं विकास

1.	चीन में हिंदी : उद्भव और विकास	- श्री विकास कुमार सिंह	03
2.	पूर्वोत्तर के सीमांत प्रांतों में हिंदी की स्थिति	- श्री अमरेन्द्र त्रिपाठी	09
3.	महाराष्ट्र में हिंदी की स्थिति	- डॉ. अनीता गांगुली	19
4.	क्रोएशिया में भारत विद्या - विकास, स्वरूप एवं दृष्टि	- डॉ. विसेंजा ग्राबोवाक	24

हिंदी : लिपि, साहित्य और संस्कृति

5.	विलुप्तप्राय टांकरी लिपि को पुनर्जीवित करने के भगीरथ प्रयास	- डॉ. हरीश चंद्र लखेड़ा	29
6.	देवनागरी लिपि का वैज्ञानिक पक्ष	- डॉ. रश्मि वार्ष्णेय	35
7.	हिंदी का पहला उपन्यास	- श्री योगेश्वर तिवारी	38
8.	मॉरीशस में हिंदी का साहित्यिक क्षेत्र	- श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ	45
9.	हिंदी लघुकथा के शीर्षक पर विभिन्न अवयवों के प्रभाव का अध्ययन एवं विश्लेषण	- डॉ. वंदेश कुमार छतलानी	48
10.	प्रवासी हिंदी साहित्य की अपेक्षाएँ	- डॉ. विनय सितिजोरी	57
11.	वैश्विक हिंदी और भारतीय संस्कृति	- प्रो. सुशील कुमार शर्मा	61
12.	हिंदी एवं भारतीय संस्कृति	- डॉ. साकेत सहाय	65

हिंदी का ई-संसार और जन-माध्यम

13.	हिंदी, वेब और ऑनलाइन साहित्यिक पत्रकारिता	- श्री रोहित कुमार 'हैप्पी'	72
14.	ब्रिटेन में हिंदी मीडिया का इतिहास और वर्तमान	- डॉ. जवाहर कर्नावट	77
15.	गांधी की पत्रकारिता का भारतीय मॉडल	- डॉ. कमल किशोर गोयनका	82
16.	डॉ. कमल किशोर गोयनका का प्रवासी साहित्य एवं अन्य प्रवासी पत्रिकाएँ	- श्री कृष्ण वीर सिंह सिकरवार	88
17.	भाषाई विकास में लिप्यंतरण की भूमिका	- डॉ. राकेश शर्मा	97
18.	सिंगापुर : मीडिया में हिंदी	- डॉ. संध्या सिंह	100
19.	फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण	- डॉ. शशि दुकन	103

Scanned with CamScanner

विश्व हिंदी पत्रिका 2019

ISSN : 1694-2477

Page - 38-44

हिंदी का पहला उपन्यास

– श्री योगेश्वर तिवारी
भारत

उपन्यास भारतीय साहित्य की मूल विधा नहीं है, विदेशी विधा है। विदेशी साहित्य में भी उपन्यास साहित्य की पुरानी विधा नहीं, 'आधुनिक' विधा है। यूरोप में इस विधा की शुरुआत औद्योगिकीकरण के दौर में हुई। उसी दौर में वहाँ समाज में 'मध्यवर्ग' अस्तित्व में आया। यह 'मध्यवर्ग' उपन्यास का पहला और प्रमुख पाठक बना। 'मध्यवर्ग' उपन्यास को मुख्यतः पत्र–पत्रिकाओं में धारावाहिक रूप में पढ़ता था। अतः यूरोप में इस विधा का सम्बन्ध 'मध्यवर्ग' और पत्र–पत्रिकाओं से जोड़ा गया। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए विचारकों ने उपन्यास को 'मध्यवर्ग' का महाकाव्य कहा।

हिंदी में जिस समय उपन्यास लेखन की शुरुआत हुई उस समय तक भारत में विधिवत 'मध्यवर्ग' का निर्माण नहीं हुआ था। अतः उपन्यास ने स्वाभाविक ही यहाँ के परिवेश के अनुसार अपना रूप बदला। हिंदी आलोचक और चिन्तक नामवर सिंह का मानना है कि भारत में उपन्यास ने 'मध्यवर्ग' के महाकाव्य के रूप में नहीं, 'किसान–जीवन' के महाकाव्य के रूप में जन्म लिया।

हिंदी उपन्यास के केन्द्र में 'किसान–जीवन' बाद में आया, उससे पहले 'स्त्री–जीवन' आया। जिन रचनाओं को हिंदी में आरम्भिक उपन्यास के रूप में देखा जाता है, उनमें से अधिकतर 'स्त्री–जीवन' से सम्बन्धित समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखी गई रचनाएँ ही हैं। इन रचनाओं में उपन्यास के तत्त्व देखकर ही आलोचकों ने इनके उपन्यास होने का निर्धारण किया है । ऐसे में यूरोप में जन्म लेने वाले उपन्यास का भारत में पहुँचने पर यहाँ की हवा–पानी–मिट्टी के अनुसार रूप और गुण कुछ परिवर्तित हुआ।

दरअसल, विदेशी रूप वाले उपन्यास को भारत की साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थियों ने अपने अनुसार स्वभाव देने की कोशिश की। भारत की प्रत्येक आधुनिक भाषा ने उपन्यास में अपनी कुछ जातीय विशेषताएँ भी जोड़ीं। हिंदी जाति ने भी उपन्यास को अपने रंग में ढाला। यह 'ढलाई' धीरे–धीरे हुई।

हिंदी प्रदेश की साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों के प्रभाव में हिंदी उपन्यास का स्वभाव भी विकसित हुआ। यह हिंदी की अपनी सफलता थी। यह सफलता उसे एक दिन में नहीं मिली है। इसके लिए उसने एक लम्बा संघर्ष किया। इस संघर्ष में बहुत–सी बातें इतनी पुरानी हो गई हैं कि उनको मूल स्वरूप का पता लगाने के लिए कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

भक्त कवि तुलसीदास ने *रामचरितमानस* में लिखा है –

हरित भूमि तृन संकुल समुझि परहिं नहि पंथ ।
जिमी पाखण्ड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ ।।

हिंदी के पहले उपन्यास को लेकर भी मतों और स्थापनाओं का इतना जंजाल खड़ा हो गया है कि उसमें मूल विषय कहीं खो–सा गया है। आगे हम प्रमुख विद्वानों के मतों की चर्चा करते हुए हिंदी के पहले उपन्यास तक पहुँचने की कोशिश करेंगे।

हिंदी उपन्यास का आरम्भ : मुख्य स्थापना

हिंदी उपन्यास के आरम्भ से सम्बन्धित वाद–विवाद का इतना झाड़–झंखाड़ खड़ा हो गया है कि इसे समझने के लिए बनी–बनाई लीक से हटकर किसी नए रास्ते की तलाश की ज़रूरत है।

नए रास्ते की ज़रूरत इसलिए भी है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लाला श्रीनिवास दास के *परीक्षा गुरु* (सन् 1882) को अंग्रेज़ी ढंग का पहला हिंदी उपन्यास माना है। आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी ने *पूर्णप्रकाश* और *चन्द्रप्रभा* को भारतेन्दु की रचना मानकर इसे हिंदी का पहला उपन्यास कहा है। डॉ. रामविलास शर्मा ने कहा कि "यदि यह (*पूर्णप्रकाश और चन्द्रप्रभा*) हिंदी का पहला उपन्यास है, तो कहना होगा कि हिंदी–कथा साहित्य की शुरुआत ही साम्राज्य–विरोध और सामन्त–विरोध

1. तुलसीदास : रामचरितमानस, किष्किंधा काण्ड, दोहा संख्या 14

Self Attested
योगेश्वर तिवारी

Scanned with CamScanner

अक्टूबर 2019
मूल्य ₹ 50

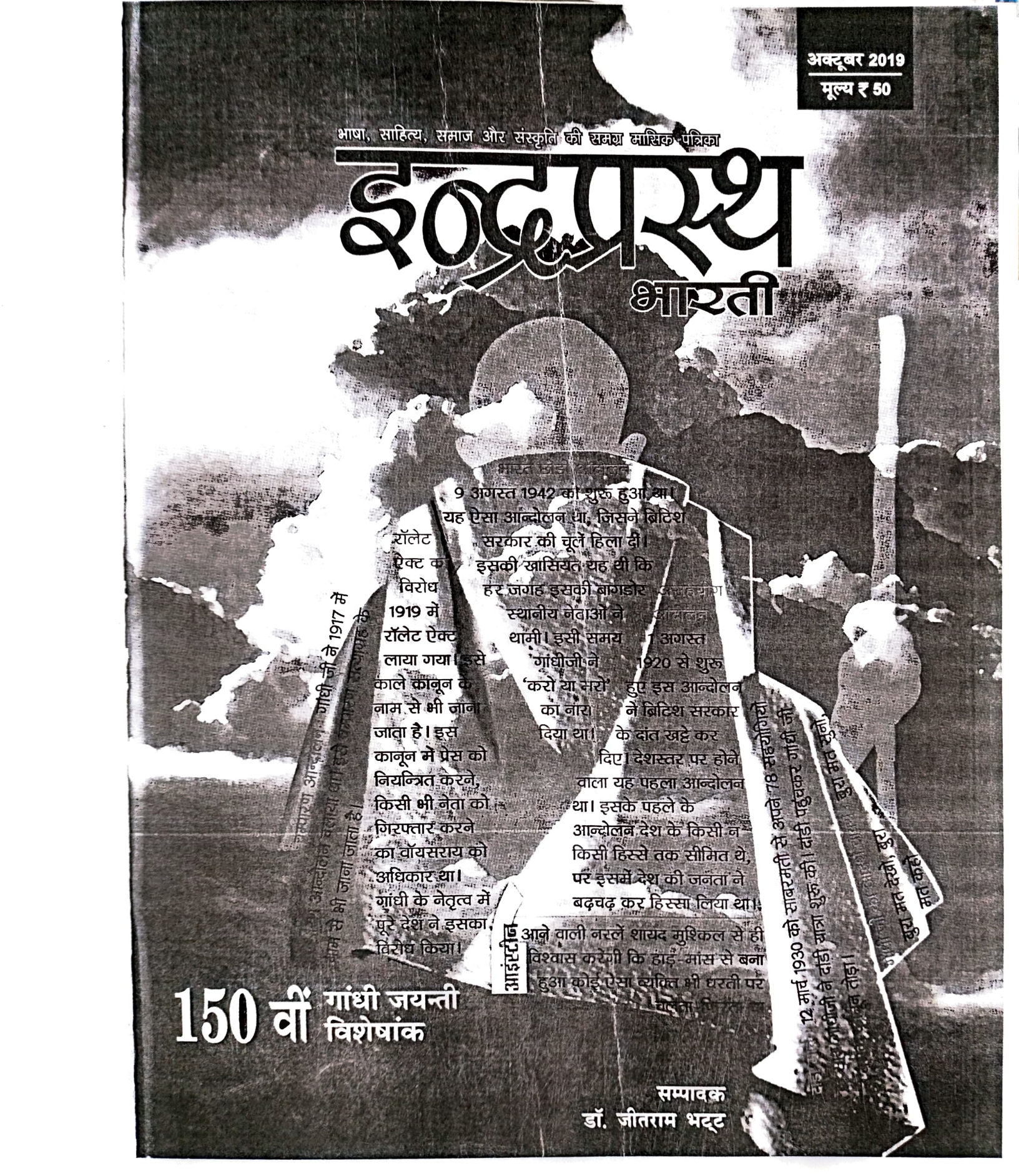

भाषा, साहित्य, समाज और संस्कृति की समग्र मासिक पत्रिका

इन्द्रप्रस्थ भारती

150 वीं गांधी जयन्ती विशेषांक

सम्पादक
डॉ. जीतराम भट्ट

सम्पादकीय 5

लेख

महात्मा गांधी और भारत की लोकचेतना	राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी	7
गांधी कथासाहित्य में रम गए हैं	उषाकिरण ख़ान	14
गांधी और साहित्य	सूर्यनाथ सिंह	17
अब तक क्यों नहीं पैदा हुआ कोई दूसरा गांधी	स्वतन्त्र मिश्र	22
संकटमोचक गांधी	अनुराग अन्वेषी	25
गांधी और वैश्विक पर्यावरण	डॉ. अमित कुमार विश्वास	28
गांधी, चरखा और बा	प्रसून लतांत	36
हर युग में रहेगी गांधी के विचारों की प्रासंगिकता	सिनीवाली	39
इतिहास से सबक लेते गांधी नसीहत देना नहीं भूलते	अमरेन्द्र किशोर	46
गांधीजी का भाषा चिन्तन : आज के सन्दर्भ में	डॉ. हरेन्द्र सिंह असवाल	53
लोकरंग में गांधी	प्रीतिमा वत्स	57
आधुनिक हिन्दी साहित्य में गांधीवाद	निशा सहगल	62
प्रवासी भारतीयों के सम्बल महात्मा गांधी	डॉ. वेद मित्र शुक्ल	65
'हे राम' और 'गांधी' के बहाने कुछ बातें	नीरा जलक्षत्रि	69
अभिव्यक्ति की छटपटाहट : 'इंडियन ओपीनियन' की अवधारणा और सत्याग्रह-संघर्ष	डॉ. धूपनाथ प्रसाद	76

संस्मरण

कुसुम ताई में दिखते हैं बापू	सुषमा सिंह	88

साक्षात्कार

गांधी सिर्फ़ मुझमें नहीं, आपमें, हम सबमें गांधी हैं–तारा गांधी भट्टाचार्य	साक्षात्कारकर्त्ता : नाज़ ख़ान	93

धरोहर

गांधीजी और राज्य	परिपूर्णानन्द वर्मा	99
कविताएँ	आलोक सेन	102

गांधीजी का भाषा चिन्तन : आज के सन्दर्भ में

डॉ. हरेन्द्र सिंह असवाल

गांधीजी की 150वीं जन्म-जयन्ती के उपलक्ष्य में पूरे देश में अनेकों सरकारी और ग़ैर-सरकारी संस्थाएँ आयोजन कर रही हैं। साहित्य, समाज, संस्कृति और इतिहास से जुड़े समाज के हर वर्ग के लोग इन आयोजनों में गांधी सम्बन्धी विमर्शों पर बहसरत हैं। यहाँ हम उनके भाषा चिन्तन पर बात करेंगे। असल में गांधीजी अनेक भाषाओं को जानते थे, और कुछ भाषाओं में वे लिखते-पढ़ते रहे हैं। उनका भाषा सम्बन्धी चिन्तन व्यापक है। किसी एक भाषा के विद्वान से उनकी भाषा पर बात करना सर्वथा न्याय संगत नहीं हो सकता। गांधीजी का अनुभव-संसार और कार्यक्षेत्र बहुआयामी है। उसी तरह उनकी भाषा विषयक जानकारी भी उतनी ही विपुल है। वे हिन्दी, गुजराती, उर्दू, तमिल और अंग्रेज़ी, इतनी भाषाओं के सीधे सम्पर्क में थे। जैसा कि गांधीजी ने स्वयं लिखा है, "1894 के बाद से मुझे जमकर पढ़ने का समय दक्षिण अफ्रीका की जेलों में ही मिला। मुझे न केवल पढ़ने का शौक उत्पन्न हुआ, बल्कि संस्कृत का अपना पूरा ज्ञान करने और तमिल, हिन्दी और उर्दू का अभ्यास करने की रुचि भी जगी। तमिल इसलिए कि दक्षिण अफ्रीका में अनेक तमिल भाषियों से मेरा सम्पर्क था और उर्दू इसलिए कि बहुत से मुसलमानों से मुझे काम पड़ता था। दक्षिण अफ्रीकी जेलों में मेरी पढ़ने की अभिरुचि तीव्र हो गई थी, इतनी कि दक्षिण अफ्रीका के अपने अन्तिम कारावास के दौरान मियाद पूरी होने से पहले ही छोड़ दिए जाने पर मुझे बहुत दुःख हुआ।"[1]

यही नहीं हिन्दुस्तान की जेलों में उन्होंने पढ़ने का जो कार्यक्रम दिया, वह तो और भी अविश्वसनीय लगता है! अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों की सूची दो पृष्ठों में दी है, वह दंग करने वाली है।[2] ऐसे व्यक्ति की भाषा पर विचार करना बहुत ही श्रमसाध्य है।

20 सितम्बर 1918 को गांधीजी ने सरोजिनी नायडू को पत्र लिखा। उन्हें पूर्णिया, बिहार जाना था लेकिन वे बीमार पड़ गए। उन्होंने सरोजिनी नायडू को पत्र में लिखा कि, "मैं बीमारी के कारण नहीं आ पाऊँगा। आप ठीक ढंग से काम करेंगी और अपना भाषण हिन्दी या उर्दू– जिसे भी आप राष्ट्रभाषा कहें – में देंगी । आपके उदाहरण से वहाँ के युवक अपनी मातृभाषा के विकास का महत्त्व समझेंगे। क्योंकि उनके लिए हिन्दी या उर्दू केवल राष्ट्रभाषा ही नहीं, उनकी मातृभाषा भी है। चाहे वह एक पंक्ति में ही हो मुझे लिखिए ज़रूर। (महादेव देसाई की हस्तलिखित डायरी से[3])

स्वामी सत्यदेव को 6 फरवरी 1919 को गांधीजी ने पत्र हिन्दी में लिखा–

"स्वामी जी! आपका पत्र मिला। आप सच कहते हो देविदास के साथ भेजा हुआ पैगाम से आप सन्तुष्ट न हो शकते। पाति नहीं लिखने का सबब शीर्फ मेरा आलस्य ही है। मुझे क्षमा कीजिएगा।... हिन्दी शिक्षा के लिए मद्रास प्रान्त में आप सब योग्य

सम्पर्क – फ्लैट नं.-72,
महाभद्रकाली अपार्टमेंट
सेक्टर-13, प्लॉट नं.-6
द्वारका, नई दिल्ली-110078
मोबाइल – 9810793295
ईमेल – harenders.aswal@gmail.com

अंक 11 भाग-01 जनवरी-मार्च (2019) ISSN:2348-7771

PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL

आभ्यंतर

लोक, भाषा, विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

संपादक
कुमार विश्वमंगल पाण्डेय

इस अंक में...

...आलेख

1.लोकमंगल की पत्रकारिता और वर्तमान चुनौतियां…डॉ. माला मिश्र...5

2.भारतीय समाज की दिग्भ्रमित वैचारिक प्रवृत्तियाँ....सी. एल. सोनकर...9

3.रीतिकालीन कवि वृंद की काव्य-चेतना....डॉ. भारती महादेव सानप...13

4.नवें दशक की हिंदी कहानी में लोककथा की उपस्थिति….डॉ. रौबी...16

5.आदिकालीन हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचकों की आलोचना दृष्टि....कल्पना कुमारी...19

6.नाच्यौ बहुत गोपाल: मेहतर समाज की त्रासदी का आख्यान....आरती...22

7.हिन्दी साहित्य में यात्रा वृत्तान्त का स्वरूप और विकास....कमला रानी...26

8.हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथाओं में चित्रित अर्थनैतिक परिदृश्य....मीनाक्षी कुमारी पाण्डेय...30

9.कृष्णा अग्निहित्री की कहानियों की भाषा शैली....मुकेश शर्मा...34

10.ग्रामीण परिवेश और स्त्री चेतना का प्रसार....शशि किरन शर्मा...38

11.सिनेमा का गीत-संगीत और विदेश में हिंदी-बोध....नीलम पाण्डेय...41

12.डॉ. रामकुमार वर्मा के नाटकों में नारी पात्र....अनीता अग्रवाल...44

13.सामाजिक यथार्थवाद की अवधारणा....उत्तम कुमार यादव...48

14.मीडिया जनमानस की वैचारिक अभिव्यक्ति...राकेश कुमार दुबे...51

15.'कृष्णगीतावली' में अभिव्यक्त तुलसी की मानवतावादी दृष्टि…सुमित कुमार…57

16.'दिल्ली शहर दर शहर' और 'ज़माने में हम' में व्यक्त स्त्री-प्रश्न…तनुज जैन…62

17. मराठी एनईआर (Named Entity Recognition): समस्याएँ और समाधान…हेमलता गोडबोले...64

18.नागार्जुन की साहित्यिक यात्रा…सज्जन कुमार...67

➢ कहानी...

- गदल...रांगेय राघव
- लिली....सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
- बहादुर....अमरकांत
- परदेसी...बदिउज्जमाँ
- अंतिम इच्छा...बदिउज्जमाँ
- हाजी कुल्फीवाला...अमृतलाल नागर